लियो टॉलस्टाय

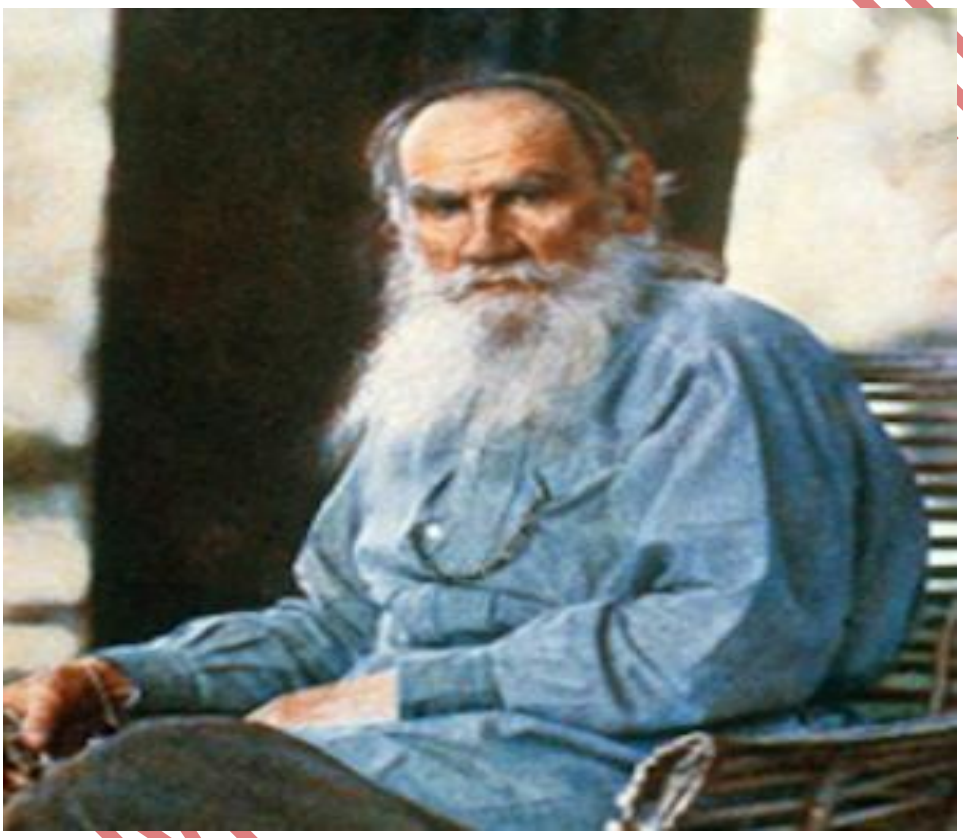

Dr. Manish Shrimali

Assistant Professor

Mohan Lal Sukhadia University

Udaipur (Rajasthan)

लियो टॉलस्टाय

लियो टालस्टाय उन्नींसवी सदी के सर्वाधिक सम्मानित लेखकों गणना की जाती है। टॉलस्टाय उपन्यासकार, कहानीकार, नाटककार, निबंधकार एवं एक महान् दार्शनिक जैसी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। लियो विश्व के उन चुनिंदा व्यक्तियों में से एक है जिन्होंने अपनी अद्भुत योग्यता से विश्व को संघर्ष प्रतिरोध हेतु एक वैकल्पिक तकनीक प्रदान की जो शांति एवं प्रेम के विचारों पर आधारित थी।

लियो टॉलस्टाय का जंम **9** सितंबर **1828** को मास्को से लगभग **100** मील दक्षिण में स्थित रियासत यास्न्या पोल्याना नामक स्थान पर एक संपन्न परिवार में हुआ था। इनका पूरा नाम काउंट लेव निकोलायेविच टॉलस्टाय था। इनके पिता निकोलायोविच टॉलस्टाय और माता मारिया टॉलस्टाय था। किंतु दुर्भाग्य से बचपन में ही इनके माता-पिता का देहांत हो गया था। टॉलस्टाय को इनकी चाची कात्याना ने पाला था। **1844** ई. में अपनी उच्च शिक्षा के लिए कजान विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया किंतु स्नातक होने से पूर्व ही अपनी रियासत सभी मामलों के कारण उन्हें बीच में छोड़ **1847** ई. घर आना पड़ा। **1862** ई. में इनका विवाह सोफिया एंड्रिवना बेहज से हुआ जिसे वे सोनिया पुकारते थे। सोनिया लियो से **16** वर्ष छोटी थी। सोनिया ने नीजी सहायक एवं वित्त प्रबंधक के रूप में लियो की सहायता की थी। प्रारंभिक वैवाहिक जीवन दोनों का अच्छा रहा। टॉलस्टाय के विचारों में जब अतिवादिता आने लगी और वे संपत्ति को दान में देने लगे तब दोनों के संबंध में खटास आने लगी थी।

टॉलस्टाय का जीवन विविधतापूर्ण रहा है। प्रारंभिक जीवन उसी प्रकार वीलासीतापूर्ण व्यतीत हुआ जैसे किसी संपन्न व्यक्ति का होता है। यौवन एक सैनिक के रूप में। सन् **1852** में लियो टॉलस्टाय सेना में शामील हुए। उन्हें कॉकेकश पर्वतीय कबीलों से होने वाली दीर्घकालीन लड़ाई के लिए प्रारंभ में नियुक्त किया गया। वहीं पर अवकाश के समय में उन्होंने पहली रचना 'चाईल्डहुड' **1852** ई. में रची। उनका सैन्य जीवन दीर्घ नहीं था। क्रिमीया युद्ध के बाद उन्होंने सैन्य सेवा से अवकाश ले लिया।

क्रिमीया युद्ध के बाद लियो टॉलस्टाय के जीवन का महत्वपूर्ण पड़ाव आता है। यहां पर टॉलस्टाय एक कहानीकार, उपन्यासकार, दार्शनिक, विचारक एवं मानववादी के रूप में स्वंय को स्थापित करते है। इसी टॉलस्टाय ने महात्मा गांधी, मार्थिन लूथर किंग जैसे व्यक्तियों के विचार एवं जीवन को गहराई तक प्रभावित किया था। इनकी प्रमुख रचनाएं निम्न है- वार एंड पीस, अन्ना केरिओना, द डेथ ऑफ इवान इल्योविच, द किंगडम ऑफ गॉड विथिंन यू, रेज्जरक्शन, द कज्जाक आदि है।

क्रिमीया का युद्ध टॉलस्टाय के लिए परिवर्तनकारी बिंदु था। युद्ध में हुए भीषण हत्याकांड देखकर उन्होंने सैन्य जीवन से संन्यास ले लिया। इस दौरान जार निकोलस प्रथम की मृत्यु के बाद अलेक्जेंडर द्वितीय जार बना।

Dr. Manish Shrimali

जनता के दबाव में रूस में इस राजनीतिक एवं आर्थिक सुधार हो रहे थे। **1861** ई. में खेतीहर दासों की मुक्ति के लिए जार ने पांच सदस्यों की एक कमेटी बनाई जिसमें टॉलस्टाय को भी रखा गया। अपने उनमुक्त विचारों के चलते टॉलस्टाय ने दास मुक्ति का समर्थन किया। टॉलस्टाय भी इस समय जीवन में सुधार एवं प्रयोग के समर्थक थे। इन्होंने अपने गांव में ही एक आदर्श प्राथमिक पाठशाला खोली जहां पर शिक्षकों को सख्त हिदायत थी कि वे छात्रों को न तो कोई पुरस्कार दे न कोई दंड। संभव हो सके तब तक वे उन पर नैतिक प्रभाव ही डाले किंतु उससे अधिक कुछ कहने का अधिकार नहीं था। टॉलस्टाय बच्चों में स्वाधीनता और अपने आप काम करने की इच्छा पैदा करना चाहते थे। **1881** ई. में रूस में कुछ लोगों के द्वारा जार अलेक्जेंडर द्वितीय की हत्या कर दी गई। इस घटना ने टॉलस्टाय को नैतिक एवं धार्मिक रूप से झकझोरा। उनके लिए यह हत्या ईसा मसीह के उपदेशों को पैरों तले रौंदने जैसा था किंतु जब नए जार अलेक्जेंडर तृतीय ने भी हत्यारों के वध करने का आदेश दिया। जब टॉलस्टाय ने नए जार को एक विस्तृत पत्र लिखा। उसमें ईसा मसीह की शिक्षा को याद दिलाते हुए अपराधियों को क्षमा करने की प्रार्थना की गई थी। उन्होंने पत्र में लिखा था कि निर्दयी शासक और उदार सुधार दोनों का ही प्रयोग विफल हो चुका है, ऐसे में क्षमा की नीति अपनाना श्रेयस्कर होगा। इस पत्र का उन्हें कोई उत्तर नहीं मिला और अपराधियों को फांसी पर चढ़ा दिया गया।

टॉलस्टाय के जीवन का दूसरा सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तन तब हुआ जब यहां रूस में जनगणना का प्रारंभ हुआ तब वे कुछ समय के लिए मास्को चले गए इस दौरान उन्हें रूस की गरीबी, दरिद्रता एवं अभावपूर्ण जीवन को नजदीक से देखने का अनुभव हुआ। इन्हीं अनुभवों पर उन्होंने 'तब हम क्या करेंगे' शीर्षक से पुस्तक लिखी। टॉलस्टाय का मानना था कि गरीबी को सामाज में आमूलचूल परिवर्तन के बिना दूर नहीं किया जा सकता है। उनका मत था कि सामाजिक बुराईयों का मुख्य कारण धन है। वे कहा करते थे कि धन एक प्रकार का दबाव है जो सरलता से दूसरे पर डाला जा सकता है। उन्होंने धनिक वर्ग को सलाह दी-अपने किए हुए पर पश्चात्ताप करो, अपने जीवन का अर्थ समझो, अपने खजाने में से थोड़ा सा धन गरीबों को दो या न दो, मगर उनके कष्टपूर्ण और परिश्रमी जीवन में भागीदारी अवश्य करो। सबसे महत्वपूर्ण यह था कि टॉलस्टाय ने अपने जीवन को भी इसी मान्यता के अनुरूप ढाल दिया था। नगर का जीवन उनकी प्रकृति के अनुकूल नहीं था, इसीलिए वे यास्नाया पोल्याना लौट आए। यहां पर रहते हुए वे साहित्य सेवा के साथ ही वे गरीबों के साथ लकड़ी काटते, पानी भरते और जूते बनाते थे। वे स्वंय के हाथों से निर्मित जूते पहनते थे। अपनी पीठ पर गठरी लाद कर देहातियों की भांति ही पैदल यात्रा करते और हमेशा गरीबों की सहायता के लिए तैयार रहते थे। एक रूसी काउंट होकर भी वे अपना जीवन दरिद्र और किसानों की तरह व्यतीत करते और उनके दुःख में भगीदार होते थे। टॉलस्टाय का अपने सिद्धांतों को अपने जीवन में उतारने का यहीं प्रयास गांधीजी पर सबसे ज्यादा प्रभावकारी बना।

जीवन के उत्तर काल में दिन-प्रतिदिन वे संन्यासी जीवन तथा ईसा मसीह के माउंट ऑफ द सर्मन उपदेश के प्रति अधिक झुकते चले गए और वे पहले की अपेक्षा अधिक अहिंसा व प्रेम के सिद्धांत में विश्वास करने लगे। इस महान् दार्शनिक, उपन्यासकार एवं विचारक का **82** वर्ष की आयु में **20** नवम्बर **1910** को देहांत हो गया।

Dr. Manish Shrimali